रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

कांग्रेसके लिअे दो प्रश्न

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १९ सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई अंक ७

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-१४

अहमदाबाद, शनिवार, ता० १६ अप्रैल, १९५५

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

लोकसेवा और राज्यसत्ता

[पुरी सर्वोदय समाज संमेलनमें ता० २५-३-'५५ को श्री विनोबाके दिये हुअे मंगल प्रवचनका सार यह है।]

हर रोज हम आसमानमें देखते हैं कि अुसमें विचरण करनेवाले पक्षी अपने जीवनके शोधके लिअे, विश्रान्तिके लिअे अपने घोंसलोंमें वापिस आ जाते हैं। वेद कहता है कि सारे जीव विविध कार्योंको करते हुअे, अनेक कामोंका संपादन करते हुअे, कर्मफल भोगते हुअे थक जाते हैं। फिर अुत्साह, शान्ति और परीक्षणके लिअे अेक जगह आ जाते हैं।

'यत्र विश्वं भवति अेकनीड़म्'

महात्मा गांधीजीके प्रयाणके बाद, अुस आकाशमें संचार करनेवाले व्यक्तियोंके लिअे सर्वोदय-संमेलन अेक विश्रामस्थान हो गया है। सालभरमें अेक दफा हम अगर अिकट्ठे नहीं होते, तो जाने-अनजाने हमारी अहिंसा आपसमें टकराती, यह संभव था। अिसके लिअे हमारा यह सौभाग्य है कि अेक घोंसला हमें मिल गया है। हम अेक-दूसरेसे सलाह-मशविरा कर सकते हैं। जैसे शंकरराव देवने कहा कि यह सत्संग है। अैसे कामोंमें जो चर्चा होती है, अुसमें दुराव-छुपाव नहीं होना चाहिये, आवेग भी नहीं। और अगर परस्पर विरोधी विचार भी हों तो नदियोंकी तरह सागरमें मिलनेकी चेष्टा हमारी मुक्त चर्चामें होनी चाहिये। तो अिसलिअे अभी मैं जो विचार आपके सामने प्रकट करूंगा, अुसमें आग्रह नहीं है आपके माननेके लिअे। चिन्तन है मेरा। अितना कार्य तो सर्वोदय समाजमें होना ही चाहिये।

थोड़ासा शासन तो रहेगा ही

हममें से बहुत लोग मानते हैं कि समाजमें दण्डके आधार पर शासन चलानेकी जरूरत नहीं रहेगी। दण्डाधार शासनकी निरर्थकता तो साम्यवादी भी मानते हैं। पर अिस समय केन्द्र-सत्ता होनी ही चाहिये, अैसा वे मानते हैं, जिसके आधार पर हम दूसरी अन्यायकी संस्थाअें खतम करेंगे; जैसे आग लकड़ीको जलाकर स्वयं भी खतम हो जाती है, वैसे ही केन्द्र-सत्ता भी स्वयं खतम हो जायगी। यह थोड़ेमें मैंने आपके सामने अेक विचार रखा है, जिसका वे शास्त्र भी बना चुके हैं।

दूसरे लोग भी थोड़ासा शासन मानते हैं। सत्त्व, रज, तम तो चलते ही हैं, अिसलिअे थोड़ासा शासन तो रहेगा ही।

पर सारे लोग जानते हैं कि आखिरमें दण्डमुक्त समाज-रचना ही रहेगी। अिस समाजका यही विचार है। अहिंसक समाजमें भी आजकी परिस्थितिमें थोड़ा शासन तो चाहिये ही।

क्या कांग्रेस बाधक नहीं बनेगी?

सर्वोदयमें दण्ड और सत्ताका स्थान नहीं होगा। अुस समाजमें सेवाकी प्रधानता होगी। अुस दृष्टिसे सोचते हैं तो हमको लगता है कि अिस देशकी अहिंसक रचनाके लिअे सबसे बाधा देनेवाली वस्तु आजकी कांग्रेस तो नहीं होगी? यह देशकी सबसे बड़ी संस्था है। अिसमें चुनाव, चुनावसे सत्ता, सत्तासे सेवाका कार्यक्रम है। जिस देशमें सबसे बड़ी संस्था चुनाव पर आधारित हो, क्या वह अहिंसक समाजकी स्थापनामें बाधक नहीं बनेगी?

दूरद्रष्टा और अुपद्रष्टा भी जो थे, अुन्होंने सोचा था कि जिस कांग्रेसने अिस देशको पराधीनतासे मुक्त किया, वह संस्था लोक-सेवक-संघ बन जाय। हम सोचते हैं कि अुनकी कितनी बड़ी कुशल बुद्धि थी! अब सोचा जाता है कि 'भारत-सेवक-समाज' सेवा करे। पर जब देशकी सबसे बड़ी संस्था सत्ताभिमुख है, तब भारत-सेवक-समाजको बल नहीं मिलेगा, वह गौण ही रहेगा, अैसा मैं मानता हूं।

सेवामय संस्थाकी जरूरत

समाजमें सेवाकी जरूरत है। सेवा हिंसक समाजमें भी होती है। पर अहिंसक समाजमें सबसे बड़ी संस्था सेवामय होगी। लोक-सेवक-संघमें यह था कि कुछ क्षेत्रोंमें शासन रखकर सारा समाज दण्ड-निरपेक्ष हो जाता; सेवा सार्वभौम होती और सत्ता सेविका होती; सत्ताका नियंत्रण करनेका अधिकार अुस सेवासंस्थाको होता; अुसका आशीर्वाद लेकर ही चुनाव होता।

पर वह नहीं हुआ। आज जो कुछ हुआ, वह अिसके प्रतिकूल हुआ। कारणोंकी परीक्षा मैं करना नहीं चाहता। लगा कि जो बलशाली संस्था बन चुकी है, वह यदि चुनाव क्षेत्रमें रहती है तो शायद नवीन राज्यके लिअे सुरक्षा रहेगी। परंतु यह अेक अैसी घटना हुअी कि अहिंसाका मार्ग बाधाओंसे घिर गया।

फिर अेक नयी संस्था बनानेकी जिम्मेदारी नाहक आती है। अेक अैसी संस्था हम देशमें बनायें जो सेवामय हो, और जो सबसे बड़ी हो। यह अेक कठिन वस्तु है। जिनके बल पर यह संस्था बनेगी, वे निर्बल हैं, छोटे हैं। छोटे आदमी छोटी संस्थाअें तो बना ही सकते हैं। चाहे कांग्रेस या महाकांग्रेस भी क्यों न प्रतिकूल हो। पर जिम्मेदारी बड़ी कठिन है और अगर परमेश्वर चाहेगा तो निर्बल व्यक्ति भी अुसे बना लेंगे। किंतु जिम्मेदारी राजनैतिक व्यक्तियोंकी है, वे हमें मदद दें। चाहे कोअी भी हों; जहां वे बैठे हैं, वे अेक अैसी संस्था बनायें जो चुनावसे भी अतिरिक्त हो। नया ग्रूप बनानेकी सिफारिश मैं नहीं करता। लेकिन जब तक ताकतका अुन्हें भास है, मैं नहीं चाहता कि अुनमें से किसीकी ताकत टूट जाय।

चुनावकी मर्यादा

चुनावको कितना भी महत्त्व क्यों न दिया जाय, पर वह अैसी चीज नहीं कि जिससे समाजको बल मिले, समाजकी अुन्नति हो। यह चुनाव डेमोक्रेसीमें खड़ा किया गया अेक यंत्र है। डेमोक्रेसीकी मांग है कि हरअेककी राय पूछी जाये। हर कोअी जानता है कि अैसी कोअी योजना अीश्वरने नहीं बनाअी कि जिसके आधार पर अिस बातका हम समर्थन करें। पंडित नेहरूको अेक वोट है, अुनके चपरासीको भी अेक वोट है। अिसमें क्या अकल है,

www.vinoba.in

वह हमें कोअी नहीं समझा सकता। पर हमारे वेदान्तका प्रचार अिससे होता है, आत्माके समानत्वका प्रचार होता है, अुसके आधार पर हम साम्ययोगी समाजकी स्थापना कर सकते हैं, अैसा मुझे लगता है। चुनावमें अैसा बल नहीं कि जिससे समाजमें परिवर्तन हो सके। अिस वास्ते चुनावसे व्यावहारिक क्षेत्रमें कितना भी परिवर्तन क्यों न हो, मूल्य-परिवर्तन नहीं होता। अिसलिअे वे (राजनैतिक व्यक्ति) जहां बैठे हैं, अगर अुनको यह विश्वास है कि हमारा प्रयत्न निष्फल होता है, तो अुन्हें निकल आना चाहिये।

अहिंसामें तीव्र संवेग चाहिये

दूसरी बात गांधीजीकी अहिंसाकी है। हममें से कुछ लोग सरकारमें गये हैं, कुछ बाहर हैं। अिन दिनों अहिंसाका सरकारी अर्थ यह हुआ है कि समाजको कमसे कम तकलीफ देना। हमें लगता है कि अहिंसाकी यह व्याख्या अहिंसाके लिअे बड़ी खतरनाक है। हिंसाके लिअे यह अुपयोगी हो सकती है। जब वे समाजवादी रचनाकी और अहिंसाकी बात करते हैं, तो दोनों मिलकर सिवाय सत्याग्रहके, सिवाय सर्वोदय समाजके और कोअी अर्थ हमें नहीं मालूम पड़ता।

बुद्धने कहा था कि यदि पुण्य हम धीरे-धीरे करते हैं, तो पाप जोरोंसे अन्दर घुसेगा। 'गो स्लो' (धीरे चलना) हिंसाके लिअे अुपयोगी है, कृपया अुसे अहिंसाके लिअे लागू नहीं करें। 'तीव्र संवेगानां आसन्नः' यह कहा गया है। अहिंसामें तीव्र संवेग हो, यह गांधीजीके अनुयायी समझें, अैसी अीश्वरसे हमारी प्रार्थना है।

राजाजीने दो-तीन बातें दुनियाके सामने रखी हैं। वे तत्त्व-ज्ञाता और राजकाज-कुशल व्यक्ति हैं, शब्दशक्तिके भी ज्ञाता हैं। अुन्होंने अमेरिकाको कहा कि अेकपक्षी सज्जनता होनी चाहिये। पर अमेरिकाके कुल लोग विद्वान हैं। वहांके विद्वानोंके लिअे यह बात समझना मुश्किल है। अुन्होंने अेक फौजी आदमीके हाथ सारे पाशुपत अस्त्र, ब्रह्मास्त्र सौंप दिये हैं और कहा है कि तुम चाहो तो फारमोसामें अुसे छोड़ सकते हो। अब बड़ी मुश्किल है अुनके लिअे। राजाजीकी बात वे कैसे मानेंगे? पर राजाजी जिस देशके हैं, क्या अुस देशके लोग अुनके अिस कथनको बल देते हैं? क्या हम अहिंसामें वेग देते हैं? नहीं देते हैं। धीरे-धीरे जो चले वही अहिंसा है — यह परिभाषा बड़ी खतरनाक है।

अहिंसाम सत्याग्रहसे बल मिलेगा

तीसरी बात — अिस देशमें सत्याग्रह शब्दसे बहुतोंको डर लगता है। पर यह भ्रम है। अिससे दुनियाको सहारा मिलेगा, यह तारक मंत्र सिद्ध होगा।

लोग कहते हैं कि लोकसत्तामें सत्याग्रहके लिअे स्थान नहीं है। सबकी संमतिसे निर्णय हो अैसी जहां समाज-रचना हुअी है, वहां स्वतंत्र सामूहिक सत्याग्रहकी कोअी जरूरत नहीं रहेगी। व्यक्तिगत सत्याग्रह होगा, पर सामूहिकके लिअे गुंजाअिश नहीं रहेगी। पर मैं बार बार कहता हूं कि अहिंसामें सत्याग्रहसे बल मिलेगा, यद्यपि यह नअी वस्तु है। सबकी सम्मतिसे काम करना यद्यपि कठिन है, फिर भी हम चल सकते हैं।

सत्याग्रहका डर और आकर्षण

अभावात्मक व्याख्या ही सत्याग्रहकी व्याख्या हो गयी है — मतलब, दबाव लानेका प्रकार। सत्याग्रहका डर और आकर्षण भी समान है। अिसलिअे लोग मुझसे पूछते हैं कि तू कब तक जमीन मांगेगा? हिंसाके अस्त्र तो हम जानते हैं, पर तू वैष्णवास्त्र छोड़ेगा या नहीं?

अभावात्मक कार्य करनेकी गांधीजीके लिअे परिस्थिति थी। अुनकी प्रतिभा थी कि वे अुसमें विधायक शक्ति भी जोड़ देते थे। लोग अुनसे पूछते थे कि अिस चरखेसे अंग्रेजोंके भगानेका क्या संबंध है? अिसलिअे अुस जमानेके जो सत्याग्रह हुअे, वे अन्तिम थे अैसा नहीं मानना चाहिये।

लोकशाहीमें जिस सत्याग्रहका प्रभाव पड़ेगा, वह अधिक विधायक हो, यह हमें सोचना चाहिये। यह बिलकुल गलत है कि लोकतंत्रमें सत्याग्रहके लिअे स्थान नहीं। १९५७ तक हम लोगोंको अपने तरीकेमें पूरी ताकत लगाकर अनुभव करना चाहिये।

मैंने बिहारमें देखा, यहां भी देखता हूं, और आश्चर्यकी बात है कि मैंने बंगालमें भी देखा। अगर जोर लगाकर हम काम करें, तो हमारा दावा है कि बिहारमें भूदानका पूरा चित्र सामने आयेगा। अगर पूरी ताकतके अभावमें '५७ तक कार्य नहीं हुआ तो हम अपात्र साबित होंगे। पर मान लीजिये कि पूरी शक्ति लगाने पर भी यह कार्य नहीं हुआ तो हम अिस लायक बनेंगे और अैसे समर्थ बनेंगे कि अिससे आगेका कदम क्या अुठाया जाय अिसका विचार हम कर सकेंगे, विचार हमको सूझेगा।

अहिंसाके लिअे अुपयुक्त नहीं

अेक अैसा विचार प्रस्तुत है कि स्वराज्य जब हाथमें आया है तो अेकांगी कार्य नहीं होना चाहिये। यह अेक निस्सार विचार नहीं है। अबं यह जिम्मेवारी बहुत ज्यादा बढ़ चुकी है। पर हमारे लिअे सोचनेकी बात अितनी ही है कि यह जिम्मेदारी हम पर किसने डाली? वह अुन पर जरूर है जिन लोगोंने चुनावमें मत प्राप्त किये और जो सत्ता चला रहे हैं। अेक भाअीने कहा, कलकत्तेमें गायें रोज कत्ल होती हैं। कहते हैं कि शहरोंमें दूध कैसे सप्लाअी हो? तो क्या हम बेकार हैं कि अिसमें हाथ लगायें? शहरोंमें दूध सप्लाअी करनेकी यह वैज्ञानिक योजना है कि रोज गायें कत्ल हों? हर बात दिल्लीमें दिखानी है तो अिसका मतलब होता है जिस अहिंसाका हमने प्रण किया है, अुसके लिअे यह अुपयुक्त नहीं होगा।

देशका कल्याण नहीं

कुछ लोग कहते हैं असेम्बलीमें ही बातें सुनी जाती हैं। वहां हमारी आवाज अेक चाबुक (whip) के नीचे है। तो क्या सरकार बहरी है कि सिवाय असेम्बलीके वह कुछ सुनती ही नहीं? तो हम क्या करें? नौकरोंसे क्या कहें? मालिकसे कहें। खादीके विरुद्ध मिल बन्द करनेकी बात कहते हैं, तो कहते हैं कि लोकमत क्या है? अिसलिअे हमारी मांग है कि जो कान पकड़नेकी जगह पर बैठे हैं, वे सोचें और विचार करें।

कुछ लोग सोचते हैं कि सात्त्विक लोग अिलेक्शनमें भाग नहीं लेते। तब हम क्या करें कि सात्त्विक लोग अुसमें भाग ले सकें? कुछ लोग हमारे मित्रोंसे पूछते हैं कि क्या आप कांग्रेसमें आना चाहते हैं? तो क्या कांग्रेसमें चला जाना हमारे लिअे लाभदायक है, यह हमें सोचना चाहिये, या हमारे चले जानेसे देशका कल्याण हो सकेगा? मैं कहूंगा कि नहीं, नहीं हो सकेगा।

आग्रह नहीं, मुक्त विचार

भाअियो, जिसमें आप भला देखें अुधर ही जायं। यह बात भी हमारे भाअी ही कहते हैं। कहते हैं कि लोकशाहीके लिअे अेक विरोधी पक्ष भी होना चाहिये। पर वह कमजोर या अधिक बलवान हो तो भी खतरा है। सात्त्विक लोगोंको हिम्मत बढ़ानी चाहिये कि हम अिलेक्शनका रूप ही बदल देंगे। चाहे चुनावमें भाग लें या नहीं, पर अुन पर हमारा असर जरूर पड़ना चाहिये। आज हम सोचते हैं कि हम मोहचक्रमें पड़े हुअे हैं। सारी संस्थाओंमें हमारे मित्र पड़े हैं। हमारा आग्रह नहीं, मुक्त विचार है कि आप भी सोचिये। किसी भी संघकी ताकत टूट जाय, यह हम नहीं चाहते। पर हम यह पूछना चाहते हैं कि हमारी कम-जोरीसे भी किसीका हित है क्या?

मान लीजिये विनोबा कांग्रेसी हो गया। मैं मानता हूं कि कांग्रेसमें, प्रजा-समाजवादी पार्टीमें भी अच्छे लोग हैं। पर हमारा

www.vinoba.in

कांग्रेसमें जाना देशके लिअे लाभदायक नहीं होगा। समझना चाहिये कि जितने विचार फैले हैं, अुन्हें कमजोर नहीं होना चाहिये।

आप सब लोग मेरी बात पर विचार करें और सोचें।

विनोबा

बम्बअी राज्यमें शराबबन्दी-सप्ताह

१

राष्ट्रपतिकी शुभेच्छायें

बम्बअी राज्यमें ६ अप्रैलसे शुरू होनेवाले पांचवें शराबबन्दी-सप्ताहकी सफलताकी कामना करते हुअे राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद अपने संदेशमें कहते हैं: "यह जानकर बड़ी खुशी होती है कि बम्बअी राज्यकी सरकारने अश्रान्त अुत्साहके साथ शराबबन्दीकी जिस नीतिका अनुगमन किया है अुससे खासकर मिल-मजदूरों और पिछड़े हुअे वर्गोंके अनेक परिवारोंकी आर्थिक समृद्धिमें बड़ी मदद पहुंची है।

"यह देखते हुअे कि योजना-कमीशनने सारे देशमें शराबबन्दीका विस्तार करनेके हेतुसे कार्यक्रम सुझानेके लिअे शराबबंदी जांच-समितिकी नियुक्ति की है, शराबबन्दी-सप्ताहके आयोजनका अिस वर्ष निश्चय ही विशेष महत्त्व है। मैं आशा करता हूं कि अपने संविधानके निर्देशक सिद्धान्तोंके अनुसार संपूर्ण शराबबन्दीकी स्थापनाके अपने प्रयत्नमें हम लोग शीघ्र ही सफल होंगे।

"बम्बअीके अिस पांचवें शराबबन्दी-सप्ताहके अवसर पर मैं अिस क्षेत्रमें काम करनेवाले सारे कार्यकर्ताओंको अपनी शुभेच्छाअें भेजता हूं।"

२

सिंहावलोकन

[बम्बअीके मुख्यमंत्री श्री मोरारजी देसाअी पांचवें शराबबंदी-सप्ताहके मौके पर दिये गये अपने संदेशमें कहते हैं:]

"किसी संस्थाकी तरह किसी आन्दोलनके जीवनमें भी प्रत्येक वर्ष प्रगतिकी या अवगतिकी मंजिलका चिन्ह होता है। आज जब हम पांचवां वार्षिक शराबबंदी-सप्ताह मना रहे हैं, तब यह सर्वथा अुचित होगा कि हम अेक अैसी नीतिकी सफलताओं या असफलताओंका सिंहावलोकन करें, जिसके लिअे आज क्षमा मांगनेकी या बचाव करनेकी जरूरत नहीं है। वह बिलकुल ठीक साबित हुअी है और हमारे संविधानमें भी अुसे स्थान मिल गया है।

"जब आजसे आठ साल पहले बंबअीमें राज्यनीतिके अेक कदमके रूपमें शराबबंदीका पुनर्विचार किया गया था, तब अनुदार या सद्भावनावाले आलोचकोंकी कमी नहीं थी। भलाअी और बुराअीके दूतोंकी बहुलता थी। नीतिकी अवज्ञा और चुनौतियोंसे वातावरण भरा था। लेकिन राज्य-सरकारके पीछे राज्यके शांतिप्रेमी और कानूनका पालन करनेवाले नागरिकोंके विराट् बहुमतकी मजबूत सेना खड़ी थी, जो शराब पीनेकी आदतको सामाजिक पतनका चिन्ह मानते हैं। अिस तरह राज्य-सरकारका काम परंपरासे शराबके आदी बने हुअे और सामाजिक रिवाजोंके कारण शराबकी आदत लगाये हुअे लोगोंको अिस व्यसनसे दूर करने या धीरे-धीरे शराब पर अुनके अवलम्बनको घटानेका था, जिससे वे राज्यके ज्यादा अच्छे और ज्यादा अुपयोगी नागरिक बन सकें।

"अिसके लिअे जो साधन अपनाये गये, अुनमें समझावट और अनिवार्यता, शिक्षा और अमल तथा प्रचार और प्रतिबंधका योग था। अिन प्रयत्नोंको सफलता मिली है, अिस बातसे सार्वजनिक कार्यों या सामाजिक विकासका कोअी भी निष्पक्ष अभ्यासी अिनकार नहीं कर सकता। लेकिन हम अिन विजयोंसे संतोष मानकर बैठ नहीं सकते; अिस दिशामें हमें और ज्यादा सफलता प्राप्त करनेके प्रयत्न करने चाहिये। बड़ी संख्यामें शराबके आदी बने हुअे लोगों और शराबमें जहरीला आनन्द खोजनेवाले लोगोंकी विकट समस्या राज्य और समाज-सेवकोंके लिअे अेक चुनौतीके रूपमें आज भी हमारे सामने मुंह बाये खड़ी है। शराबबंदी-सप्ताहकी व्यवस्था करनेवालों, राज्यतंत्र और समाज-सेवकों तथा अिसमें विश्वास रखनेवाले नागरिकोंको अपने संपूर्ण साधनों और शक्तिके साथ अिस चुनौतीका सामना करना चाहिये।"

३

राष्ट्रीय अनुशासनका सवाल

[बंबअी राज्यमें ६ अप्रैलसे मनाये जा रहे पांचवें शराबबंदी-सप्ताहके मौके पर भारतके प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरूने नीचेका संदेश भेजा है।]

"बम्बअी राज्यने शराबबंदी दाखिल करनेमें देशका नेतृत्व किया है। यह विषय अकसर विवादकी वस्तु रहा है। यह विवाद दो बातों पर आधार रखता है: (१) आयकी हानि और (२) शराबबंदी कानूनके भंग और नाजायज शराबके अुत्पादनको रोकनेमें कठिनाअी।

"आर्थिक विचारकी हमेशा अुपेक्षा नहीं की जा सकती, लेकिन अिस तरहकी बातमें बेशक अैसे विचारोंको महत्त्वका स्थान नहीं दिया जाना चाहिये। अब हम दूसरे अेतराज पर आते हैं। वह सिद्धान्तकी बात नहीं है, लेकिन व्यावहारिक कठिनाअीकी बात है। अिसके लिअे सावधानीसे यह विचार करना चाहिये कि शराबबंदी कानून पर किस तरह अमल किया जाता है और किस तरह अुसे तोड़ा जाता है। अिस दृष्टिसे हमारी कार्रवाअियोंमें फेरबदल करना जरूरी हो सकता है, ताकि हम अपने ध्येयको ज्यादा अच्छे रूपमें सिद्ध कर सकें।

"अिसलिअे प्रश्न यह हो जाता है: शराबबंदीका अुद्देश्य अच्छा है या नहीं? अगर वह अच्छा है, तो अुसका अमल करना चाहिये, भले अिस समस्याको हल करनेके हमारे तरीकोंमें फर्क हो सकता है। अिस बारेमें मुझे कोअी शंका नहीं कि यह व्यापक अुद्देश्य हमारे देशके लिअे लाभदायक है। लेकिन मैं दूसरे देशोंके बारेमें यही बात कहनेके लिअे तैयार नहीं हूं, जिनकी अपनी अलग आदतें और अलग जीवन-पद्धतियां हैं। हमारे अपने देशमें आम जनता और कुछ चुने हुअे लोग — जो देशकी भावना अिसके विरुद्ध होते हुअे भी नशीली शराबें पीनेमें गौरव अनुभव करते हैं — दोनोंकी दृष्टिसे मैं शराबबंदीको वांछनीय समझता हूं। मेरे खयालमें यह अच्छी तरह दिखा दिया गया है कि हमारे देशकी आम जनताको शराबबंदी होनेसे आर्थिक, शारीरिक और नैतिक दृष्टिसे काफी लाभ हुआ है। वे कुछ लोग, जो यह मानते हैं कि शराब पीना ठीक है और खुले आम अैसा करते हैं, वे अपने साथ या अपने देशके साथ थोड़ा भी न्याय नहीं करते। कुछ समय पहले मैंने दिल्लीमें होनेवाली कॉकटेल पार्टियोंका जोरदार विरोध किया था। शराबबंदी अच्छी है या नहीं अिस प्रश्नको छोड़ दें, तो भी कुछ खुशहाल वर्गोंमें शराब पीनेकी यह आदत शोचनीय हो गअी है और असभ्यताकी हद तक पहुंच गअी है। हमारे जैसे गरीब देशमें, जो अपने आपको अूंचा अुठानेके लिअे जी-तोड़ मेहनत कर रहा है, यह आदत बहुत ही अशोभनीय है।

"राष्ट्रमें अमुक अनुशासन पालनेका भी प्रश्न है। अगर हम कोअी निर्णय करते हैं और अुसके लिअे कानून बनाते हैं, तो हमें अुस अनुशासनको मानना चाहिये और अुन कानूनोंका पालन करना चाहिये।

"मैं अिस बातमें पापके प्रश्नको नहीं लाता, लेकिन शराबकी अिस आदतको मैं सामाजिक दुर्गुण जरूर मानता हूं, जिसे सक्रिय रूपमें रोकना चाहिये। खास तौर पर हमारे देशकी पृष्ठभूमिको तथा हमारी आजकी परिस्थितियोंको देखते हुअे हमारे यहां शराब पीना बिलकुल अवांछनीय है।

(अंग्रेजीसे)

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

१६ अप्रैल १९५५

कांग्रेसके लिअे दो प्रश्न

कांग्रेस अध्यक्षने कुछ दिन पहले बम्बअीमें जो भाषण दिये थे, अुन्होंने कांग्रेसके भीतर काफी स्वागत योग्य आत्मनिरीक्षणकी प्रेरणा दी है; अुन भाषणों पर अखबारोंमें और विचारशील लोगोंमें महत्त्वपूर्ण आलोचनायें भी हुअी हैं। कांग्रेस अध्यक्षने अपने भाषणोंमें अैसी अनेक अत्यन्त बुनियादी चीजोंका जिक्र किया, जिनका संबंध देशकी मौजूदा हालतमें हो रही बहुतसी बातों और कामकाजसे है।

अुनके सबसे ज्यादा ध्यान खींचनेवाले अुद्गार कांग्रेस सरकारों और कांग्रस संस्थाओं — केन्द्रीय और प्रान्तीय — के आपसी संबंधोंके बारेमें थे। अुन्होंने यह कहा बताया जाता है कि भविष्यका विचार करते हुअे यह वांछनीय है कि आगेसे कांग्रेस अपनी सरकारोंका मार्गदर्शन करे, न कि सरकारें कांग्रेसका मार्गदर्शन करें, जैसा कि आज आम तौर पर होता दिखाअी देता है।

जाहिर है कि कांग्रेसकी आजकी स्थितिमें यह बात अपने असरमें अुतनी ही विनाशक है, जितनी कि वह अर्थगंभीर और महत्त्वपूर्ण है। अिस कथनकी आलोचना करनेवाले कुछ लोगोंने कहा कि अिससे हमें कांग्रेसके दो भूतपूर्व अध्यक्ष श्री कृपालानी और श्री टण्डन द्वारा अपनाये हुअे अैसे ही रुखकी याद आती है। मैं नहीं जानता कि यह ठीक वैसा ही रुख है या नहीं। मेरा खयाल है कि अुस समयकी परिस्थितियों और आजकी परिस्थितियोंमें तथा अुन भूतपूर्व अध्यक्षों द्वारा लिये गये रुख और श्री ढेबरभाअीके मौजूदा वक्तव्यमें बड़ा गहरा फर्क है; बेशक दोनों अेकसे तो हैं ही नहीं। अिसलिअे ज्यादा अच्छा यही होगा कि अैसी तुलनाको हम छोड़ दें और अिस कथनकी परीक्षा अुसके गुण-दोषके आधार पर तथा लोगोंके सच्चे हितके प्रकाशमें करें।

निश्चित ही कांग्रेस अुन सरकारोंसे बड़ी है, जिनकी स्थापना वह देशमें करती है। वह लोकप्रिय संस्था है; अुसका ध्येय आम जनताके गहरे सम्पर्कमें आना, अुनकी अिच्छाओं और महत्त्वाकांक्षाओंको जानना और अुसका नेतृत्व करना है। अिस ध्येयकी सिद्धिके लिअे कांग्रेसको राष्ट्रके लिअे और अपनी सरकारके लिअे कार्यक्रम बनाने चाहिये। अिसलिअे कांग्रेसकी आवाज सर्वोपरि होनी चाहिये, अगर लोकशाहीमें — जिसकी स्थापना हमने भारतमें की है — जनता अपना शासन अुसके हाथमें सौंपे। अिसका यह मतलब हरगिज नहीं कि सरकार प्रत्येक आदेश कांग्रेससे ही प्राप्त करे और अुसका पालन करे। यहां मतलब सिर्फ कार्यक्रम और नीतिके मुख्य मुद्दोंसे ही है, पार्टीका घोषणापत्र अिसका सामान्य या संपूर्ण वक्तव्य कहा जा सकता है।

अिसलिअे मेरी रायमें श्री ढेबरभाअीका वक्तव्य, शासन चलानेवाली पार्टियोंका अपनी संस्थाओंके साथ राजनीतिक व्यवहार कैसा हो अिसके सिद्धान्तके रूपमें सही है — भले कांग्रेस और अुसके नेतृत्वकी वर्तमान रचनामें अिस वक्तव्यका अुसके व्यक्तिगत या संगठन-संबंधी पहलू पर कैसा भी प्रभाव क्यों न पड़े। अिस पहलू पर कांग्रेसको विचार करना चाहिये, जो आशा है वह अब करेगी। वह समय आ गया है, जब अुसे अिस पहलूका विचार करना ही चाहिये।

अिसी तरहका अेक दूसरा प्रश्न है, जो मार्चमें हुअे पुरी सर्वोदय-समाज-सम्मेलनमें दिये गय अपने भाषणमें श्री विनोबाने अुठाया है। यह प्रश्न कांग्रेस अध्यक्ष द्वारा अुठाये गये प्रश्नसे भी ज्यादा महत्त्वका और ज्यादा गंभीर है। श्री विनोबाका प्रश्न कांग्रेसके लिअे अिस बातकी चुनौती है कि वह अपने दिलको टटोले और पता लगाये कि आज जनताकी सबसे बड़ी, सबसे महत्त्वपूर्ण और सबसे असरकारी संस्थाके नाते वह अुत्तम ढंगसे अपना पुनर्गठन कैसे कर सकती है। पाठकोंसे मेरी प्रार्थना है कि अिस अंकमें अन्यत्र दिये गये श्री विनोबाके अिस भाषणका वे अिसी दृष्टिसे अध्ययन करें।

श्री विनोबाने अेक दूसरा और अिससे भी ज्यादा बुनियादी प्रश्न अेक-आदमी-अेक-मत द्वारा प्राप्त हुअे बहुमतके आधार पर चलनेवाली लोकशाहीके सिद्धान्तका अुठाया है। अुन्होंने कहा कि कांग्रेसने अपनेको केवल चुनाव लड़नेवाली संस्था बना डाला है, मानो अुसने अिसी सिद्धान्तका वरण किया है, और अिस अेक काममें लगकर अुसने अपने सेवाके मूलभूत कर्तव्यकी बहुत बड़ी अवज्ञा और अुपेक्षा की है।

श्री ढेबरभाअीका प्रश्न लोकतांत्रिक शासनके सिद्धान्तकी पूर्तिके हितमें है, यानी जो पार्टी देशका शासन चलाती हो अुसका मार्गदर्शन सामान्यतः सरकारसे बाहर रहकर आम लोगोंमें काम करनेवाली पार्टी-संस्था द्वारा होना चाहिये। वे आगे कहते हैं कि अपने पार्लियामेन्टरी पक्षको प्रेरणा देने और सही अर्थमें अुसका अच्छी तरह मार्गदर्शन करनेके लिअे पार्टीकी संस्थाको लोगोंके बीच रचनात्मक ढंगसे काम करना चाहिये और विभिन्न राष्ट्रीय रचनात्मक कार्यों द्वारा अुनकी सेवा करनी चाहिये। तभी वह संस्था अपनी सरकारका सच्चे अर्थमें मार्गदर्शन कर सकती है और अुसे आदेश दे सकती है।

ये दो प्रश्न हैं, जो देशके दो सबसे ज्यादा योग्य व्यक्तियों द्वारा कांग्रेसके सामने रखे गये हैं। श्री विनोबा श्री ढेबरके प्रश्नके दूसरे पहलू पर जोर देते हैं, यद्यपि वे लोकतंत्रके सिद्धान्त और अुसकी विचारधाराका बिलकुल विरोध करते हैं। लोकतांत्रिक सिद्धान्तका यह विरोध भूदानके मुख्य कार्यकर्ताओंका अेक सामान्य मुद्दा मालूम होता है। मेरी रायमें अैसा करना गलत है, यद्यपि दूसरे दृष्टिकोणके लिअे भी काफी कहा जा सकता है — अर्थात् कांग्रेसको केवल चुनाव लड़नेवाली संस्था नहीं बन जाना चाहिये, बल्कि गांधीजीकी अंतिम दिनोंकी अिच्छाके अनुसार अुसे लोक-सेवक-संघ बननेका अुज्ज्वल यश प्राप्त करना चाहिये। लेकिन यह लोकतांत्रिक आदर्श और अुसके तंत्रमें अविश्वास रखनेसे बिलकुल भिन्न है, जिसका राजनीतिक जगत् द्वारा आम तौर पर विकास किया जा रहा है और जो आज दुनियामें बहुतसे देशोंमें प्रचलित है।

बेशक, बहुमतके शासनका लोकतांत्रिक अुपाय अपूर्ण है, जैसे कि साधारणतः अन्य सारी मानव-संस्थायें अपूर्ण हैं। यह बात ठीक है कि अुसे पूर्ण बनानेके लिअे निरन्तर जाग्रत रहना होगा, और लोगोंको प्रगतिशील दृष्टि रखकर अथक परिश्रम करना होगा। अिसलिअे दोष और खामियां तो रहेंगी ही और पूर्ण आदर्शवादी अुनसे चिढ़ेगा; लेकिन वे अुसके लिअे और लोगोंके लिअे आत्मशुद्धिके अधिक प्रयत्नोंका तकाजा करनेवाली चुनौती हैं। मुझे लगता है कि लोकशाहीसे अिनकार करनेका अर्थ है सत्याग्रहके सत्यसे अिनकार करना, क्योंकि ये दोनों अविच्छेद्य रूपसे अेक-दूसरेके साथ जुड़े हुअे हैं — सत्याग्रह लोकशाहीकी अंतिम और अजेय शक्ति है। लेकिन महत्त्वपूर्ण होते हुअे भी मैं अिस चर्चाको और नहीं बढ़ाअूंगा। अिसकी अधिक चर्चा आगे कभी करूंगा। अिस समय तो मैं यह कहकर ही अपनी बात पूरी करता हूं कि कांग्रसके अध्यक्षके नाते श्री ढेबरने और भूदान-आन्दोलनके संस्थापक तथा भारतके गांधीवादी रचनात्मक कार्यकर्ताओंकी विशाल संस्थाके मार्गदर्शक, मित्र और तत्त्वचिन्तकके नाते श्री विनोबाने जो प्रश्न अुठाया है, वह असलमें अेक संपूर्ण और गंभीर प्रश्न है।

११-४-'५५

(अंग्रेजीसे)

मगनभाई देसाई

www.vinoba.in

लोकशक्ति और लोकशाही

[सारो, अुत्कल, में ता० ९–२–'५५ को दिये गये प्रवचनसे।]

अितिहास जो जानते हैं, अुनको मालूम है कि हिन्दुस्तानमें हर प्रान्तमें गये दो-तीन हजार सालमें कमसे कम २४–२५ राज्य आये और गये। अुस जमानेके राजकर्ताओंके साथ जो चीजें आती थीं, वे अुनके जानेके बाद मिट गयीं और लोगोंका काम चलता रहा। हिन्दुस्तानकी सभ्यताका जो विकास हुआ, वह राज्य-सत्ताके कारण नहीं हुआ है। वह समाज-विचार और धर्म-विचारके कारण हुआ है। यहांके लोगोंके हृदयों पर किसी राजाकी कोअी कदर, किसी राज्य-सत्ताकी कोअी कदर नहीं रही। कहते हैं अकबरने अपने जमानेमें बहुत अच्छा राज्य चलाया। परन्तु अकबरका कोअी असर यहांकी जनता पर नहीं है, यह हमने मुसलमानोंमें काम करते हुअे देखा। मेवोंमें मैं काम करता था, मुसलमानोंकी मीटिंग की और पूछा कि अकबर बादशाहका नाम आप जानते हैं? अुन्होंने कहा, कौन अकबर बादशाह? हम नहीं जानते। अकबर जैसे सम्राट हुअे और गये, लेकिन जनता पर अुनका कोअी असर नहीं रहा। जहां अकबर जैसेका भी कोअी असर नहीं रहा, वहां काला पहाड़को कौन पूछता है? अुनके नाम अितिहासवाले सुनते हैं, लेकिन लोगोंके हृदय पर अुनका कोअी असर नहीं है, लोगोंके जीवन पर अुनका कोअी असर नहीं है। हिन्दुस्तानके लोग सिर्फ अेक ही राजाको जानते हैं—"राजाराम" को और अुसको अब भी पुकारते हैं। हिन्दुस्तानकी जनताकी यह हालत है और हम तो अुस तरहसे यहां काम करना चाहते हैं जिस तरहसे हमारे सन्तोंने किया, हमारे कवियोंने किया, हमारे बुद्ध जैसे महान पुरुषोंने किया। लोग अकबरको नहीं जानते परन्तु कबीरको जानते हैं। लोग और किसीको नहीं जानते, जानते हैं केवल संत पुरुषोंको।

अितिहासमें लिखा जाता है कि अकबरके जमानेमें तुलसीदास हुअे। यह हमारी समझमें नहीं आता कि जमाना अकबरका था या तुलसीदासका। अैसा कह सकते हैं कि तुलसीदासके जमानेमें अकबर नामका कोअी अेक बादशाह हुआ और अुसने प्रजा पर अपनी सत्ता चलानेकी कोशिश की और अुसके वंशजोंने काफी प्रयत्न किया सत्ता चलानेका, परन्तु आखिर वे मिट गये। तुलसीदास कायम रहे और अुनकी श्रद्धा आज भी लोगोंके हृदय पर कायम है। अब जो भूदान-यज्ञ चला है, वह सम्राटोंकी राह पर नहीं चला है। वह चला है पैगम्बरोंकी राह पर। राजा अच्छे हुअे, राजा बुरे हुअे, प्रजाने यह देख लिया। आखिर समझ लिया कि अिन राजाओंके हाथमें अपनी सत्ता देना अुचित नहीं होगा, अिस वास्ते राजाओंको ही मिटा दिया।

लोग अब कहने लगे कि हमको बुरा राजा नहीं चाहिये, अच्छा राजा भी नहीं चाहिये, हमको राजा ही नहीं चाहिये। लोगोंने ठीक समझा और अुन्होंने राजाकी सत्ताको मिटा दिया। अेक कदम वे आगे बढ़े। लेकिन फिर भी लोक-शक्ति बन रही है, अैसा नहीं कह सकते। यद्यपि हरअेकको वोट देनेका हक दे दिया है, फिर भी सबकी सत्ता अब चल रही है, अैसा नहीं कह सकते। अेक दफा वोट देकर जिनको चुना जाता है, अुनके हाथमें किसी भी राजाकी सत्तासे ज्यादा सत्ता होती है। प्रजाकी सत्ताका तो नाम ही नाम होता है। सत्ता चंद लोगोंके हाथमें ही रहती है और वही खतरा बना रहता है, जो राज्य-सत्तामें था कि अूपरवाले अच्छे रहे तो सारा राज्य अच्छा और अूपरवाले बुरे रहे तो सारा राज्य खराब।

हिन्दुस्तानके भिन्न-भिन्न प्रदेशोंकी हालत देखिये। मद्रास और बम्बअीकी सरकारने शराबको बिलकुल बन्द कर दिया है, पर बाकी दूसरे प्रान्तोंमें शराब चल रही है। तो हम पूछते हैं कि क्या मद्रासका लोकमत शराबके विरुद्ध था और बाकी प्रदेशोंका लोकमत शराबके अनुकूल है? अुसमें लोकमतका सवाल क्या है? वहां मोरारजीभाअी बैठे हैं। वे नहीं चाहते कि शराब यहां चले। राजाजी नहीं चाहते थे कि शराब वहां चले; और शेष प्रान्तोंके मुख्य लोग अुस पर सोचते नहीं हैं, अिसलिअे वहां जारी है।

राजाजी और मोरारजीकी अक्लमें यह बात आयी और पंतजी, विधानबाबू, श्रीबाबूकी अक्लमें यह बात नहीं पैठती। हम पूछना चाहते हैं कि पुराने जमानेमें अच्छा राजा होता था, तो राज्य अच्छी तरहसे चलता था; खराब राजा होता था, तो राज्य खराब तरहसे चलता था। प्रजाकी कोअी दखल नहीं थी। तब और आजकी हालतमें क्या फर्क रहा, बता दीजिये हमको?

दूसरी मिसाल हम देते हैं, मध्यप्रदेशमें गायका कत्ल कानूनसे बन्द कर दिया गया है और बंगालमें गायका कत्ल सरे आम चल रहा है। रोजमर्रा कलकत्तामें गायें खूब कटती हैं। हम पूछते हैं कि क्या यह लोकमतका परिणाम है? मध्यप्रदेशके लोक-मतमें और बंगालके लोकमतमें अितना फर्क पड़ गया?

हमने बोधगयामें समन्वय-आश्रम केन्द्र शुरू किया है, क्योंकि वहांसे अेशिया भरके राष्ट्रोंका सम्बन्ध आता है, बुद्ध भगवान्की वह तपोभूमि है। वहां अुस मंदिरके नजदीक ही शराबकी दुकान है, जहां रोज शराब पी जाती है और रोज गुण्डे और बदमाश जाकर वहां अपना खेल करते हैं। अेक सवाल हम आपके सामने रखते हैं। बम्बअीकी सरकारने कानून बनाया है कि जो बटाअीदार है, अुसको पांचवां या छठा हिस्सा मिलेगा। अब अिस तरहका कानून दूसरे प्रान्तोंमें नहीं हो रहा है। तो ये जो बातें हैं अुन परसे आपके ध्यानमें आयगा कि कैसे अूपरवालोंके हाथमें सब कुछ निर्भर है। जनताके हाथमें कोअी सत्ता नहीं है। वास्तवमें लोगोंके हाथोंमें कोअी सत्ता नहीं है, यह हम जाहिर करना चाहते हैं। केवल वोट मिल गया, अिससे क्या होता है? अरे, वोट तो खरीदे जाते हैं। वास्तवमें सत्ता जनताके हाथमें तभी आयेगी, जब राज्य-सत्ताओंसे लोग अपनी मुक्ति पानेकी चेष्टा करेंगे और विकेन्द्रित शासन-व्यवस्था जगह-जगह चलायेंगे। यह 'विकेन्द्रित शासन-व्यवस्था' शब्द तो मैंने व्यर्थ ही आपके सामने रखा। वास्तवमें करना यह है कि गांव गांवके लोग अपनी समस्यायें अपनी शक्तिसे हल करें।

लेकिन लोग हर बातमें सरकारका कानून मांगते हैं। विवाहमें सुधार करना है, तो बोलते हैं सरकार कानून बनाये। विवाहके बारेमें बिल पेश किये जाते हैं सरकारकी कौंसिल और असेम्बलीमें। क्या अुसके बाद हमारी विवाह-संस्थाका सुधार होगा? अस्पृश्यता-निवारण करना है, तो कानूनके जरिये होगा? कानूनमें अस्पृश्यता-निवारण हो ही चुका है, पर दुनियामें कायम है। बाल-विवाह नहीं होना चाहिये, तो बोलते हैं कानून बनाओ। कानून बन भी गया। पर लाखों बालविवाह होते हैं।

हर बातमें हम कानूनसे काम चाहते हैं। अिसका मतलब तो यह है कि कोअी जनशक्ति निर्माण करना नहीं चाहते। लोगोंके विचारोंमें कुछ परिवर्तन लाना ही नहीं चाहते। हम नया मानव नहीं बनायेंगे और पुराना मानव कायम रखकर तमाशा करना चाहते हैं। अिस तरहसे जनता आगे नहीं बढ़ सकती, अिस तरहसे क्रान्तिकारी परिवर्तन हो ही नहीं सकता।

समाजवादी पैटर्न हमको बनाना है। वह समाजवादी नमूना जाहिर हो चुका है। हमने तो अुसका स्वागत भी किया है। सरकारमें समाजवादी नमूना आयगा कि नहीं, पर समाजमें, लोगोंमें, नमूनेकी बात चलेगी। सरकारी नौकरीका तो ग्रेड बना हुआ है ही। अेक ग्रेड ५०) से शुरू होगा और १२५) पर खतम होगा, दूसरा ग्रेड २००) से शुरू होगा और ५००) पर

www.vinoba.in

खतम होगा, तीसरा ग्रेड २५००) से शुरू होगा और ५०००) पर खतम होगा। यह सारी बदली हुअी समाजवादी रचना होगी? यह सब कानूनसे बदला जायगा? लोक-परिवर्तन विचार-परिवर्तनके बिना कैसे होगा? आधारमें ही अिस तरहकी विषमता है, सरकारी नौकरियोंमें यह वैषम्य है, कॉलेज और हाअीस्कूलके शिक्षकोंमें यही विषमता है, समाजकी दूसरी रचनाओंमें भी यही विषमता पड़ी हुअी है। हम पूछेंगे कि प्राअिम मिनिस्टरकी तनखाहसे राष्ट्रपतिकी तनखाह क्यों ज्यादा होनी चाहिये? कारण बताओ। अगर यह कहा जाय कि राष्ट्रपतिके यहां तो दूसरा, तीसरा खर्च करना पड़ता है। तो वह खर्च स्टेटके जरिये हम करनेको राजी हैं, क्यों नाहक तनखाह बढ़ाअी जाय? कारण कुछ नहीं है। कारण यही है कि राष्ट्रपतिका दरजा प्राअिम मिनिस्टरके दरजेसे अूंचा है। जिसका अूंचा दरजा होता है, अुसके सिर पर ज्यादा तनखाहका बोझ लादना लाजिमी है और अुसमें सरकारका ही दोष है, अैसा नहीं है। वह दोष तो जनतामें ही है। जनताके द्वारा कानून मान्य है। साम्ययोगी समाज तब बनेगा, जब साम्यके विचार लोगोंको प्रिय होने लगेंगे और साम्ययोगके बिना अधर्म होता है, अिसका भान प्रजाको होगा।

लोग अितना भी नहीं समझते कि कानूनसे जो काम हो सकता है, अुसे करनेके लिअे यह भूदान-यज्ञ शुरू नहीं हुआ है। भूदान-यज्ञ वह काम करना चाहता है, जो काम किसी सत्तासे नहीं हो सकता है। लोगोंका हृदय-परिवर्तन करके, पुराने अनैतिक मूल्य खत्म करके, नया नैतिक मूल्यस्थापन करनेका काम भूदान करना चाहता है। अिस वास्ते हरअेकको यह समझाना है कि भाअियो, तुम्हारे गांवमें भूमिहीन पड़े हैं, अुस हालतमें तुम भूमिकी मालकियत रखते हो, तो यह गलत काम करते हो। अुसका भी अगर कानूनका आधार है तो वह कानून भी बिलकुल गलत है। नया कानून बन रहा है कि अेक आदमी २० अेकड़ तक, ४० अेकड़ तक जमीन रख सकता है। वहां कम्युनिस्ट कहते हैं कि २० अेकड़ तरी जमीन रख सकते हैं। हम कहते हैं कि नहीं रख सकते। अुतनी ही रख सकते हैं जितनी जमीन आपके हिस्सेमें आयगी। परमेश्वरने जैसे हवा, पानी, सूरजकी रोशनी सबके लिअे पैदा की है, वैसे जमीन भी सबके लिअे पैदा की है। अिस वास्ते किसीका अुस पर ज्यादा अधिकार हरजिग नहीं हो सकता। ३० अेकड़वाला कानून बनता है, ६० अेकड़वाला कानून बनता है। मान लीजिये कि हिन्दुस्तानमें ३० अेकड़ जमीन अेक परिवारमें बंट जाय। ३०-३० अेकड़में काम तो चल जायगा। लेकिन ३६ करोड़ जनसंख्या है, यानी ७ करोड़ परिवार हैं हिन्दुस्तानमें। अुनमें से अेक करोड़ परिवार शहरमें हैं। अुन्हें छोड़ दीजिये तो भी गांवोंमें ६ करोड़ परिवार रहते हैं। मान लीजिये कि शहरवालोंको जमीनकी जरूरत नहीं। गांववालोंको जमीन देनी है तो ६ करोड़ परिवारोंमें ३० अेकड़के हिसाबसे अेक करोड़ परिवारको ही जमीन मिलेगी, बाकी चार-पांच करोड़ परिवारोंको नहीं मिलेगी। अिसलिअे यह सीलिंगवाली बात नहीं चलेगी। सीलिंग नहीं बनेगा अगर हरअेकको अुसके हिस्सेकी जमीन देनी हो, बशर्ते वह जमीन चाहता है। अगर वह जमीन नहीं चाहता है तो देनेकी बात नहीं है। जमीन जो नाहक अपने पास रखेगा, अुसको हम जमीन देनेका जिम्मा नहीं अुठाते; परंतु जो जमीन पर काश्त करना चाहता है, अुसको अुसके हिस्सेकी जमीन देनी ही होगी। यहां यह कौन देने आ रहा है? कानून तो वह नहीं देने जा रहा है। अिसके वास्ते लोगोंकी मनोभूमि तैयार करनी होगी। अुनको धर्मविचार सिखाना होगा।

अगर धर्मविचार सब लोग समझें, तो अेक क्षणमात्रमें काम होता है, अगर न समझें तो ५० वर्षमें भी काम नहीं होता। लोग पूछते हैं कि कितना समय लगेगा? हम कहते हैं कि आप कितना समय लगानेका तय करते हैं? जितना समय लगाना आप चाहेंगे, अुतना आप लगा सकते हैं। आप लक्ष्यका संकल्प करें, आपका संकल्प फलेगा। बाबा तो अितना ही मानता है कि धर्म-विचार सबको समझाना है।

विनोबा

अेक सही शिकायत

शाहपुरा (राजस्थान) से अेक खादी और सर्वोदयके कार्यकर्ता भाअीने अपने पत्रमें अेक बड़ा दुःखद किस्सा लिख भेजा है। यह किस्सा छोटे पैमाने पर होते हुअे भी आजके अेक भारी दर्दको साफ तौर पर बतानेवाला मालूम होता है। आज हम समाजवादी ढंगकी व्यवस्था कायम करना चाहते हैं। अिसके लिअे सब लोगोंको रोजगारी या काम देना हम निहायत जरूरी समझते हैं। अिसके लिअे खादी और ग्रामोद्योग बहुत ही सफल और अेकमात्र साधन आज हमारे पास हैं, अैसा भी सब कोअी कहते हैं। परन्तु अिन अुद्योगोंको मारनेवाली कार्रवाअीको भी हममें से कअी लोग पसंद करते हैं। यह कार्रवाअी है कल-कारखानोंकी, जो अिन घरेलू हाथ-अुद्योगोंसे स्पर्धा करके अिन्हें अपने क्षेत्रसे हटा रहे हैं।

यह भी कहा जाता है कि यदि हम कल-कारखाने बन्द करके जीवनका जरूरी सामान घरेलू हाथ-अुद्योगोंसे बना लें, तो बेकारी जरूर नष्ट हो जायगी। परन्तु अिसके साथ यह भी कहा जाता है कि अिससे जीवन-मान गिर जायगा। यह बात बड़ी विचित्र-सी मालूम होती है। बेकार आदमी काम करने लगे तो अुसका जीवन-मान कैसे कम होगा, यह समझमें नहीं आता। बल्कि बात तो साफ है कि अिससे अुसका जीवन-मान बढ़ेगा। और आज कल-कारखानेवालोंकी जिस खतरनाक होड़का अुन्हें सामना करना पड़ता है, वह मिट जाय तो घरेलू अुद्योगवालोंकी और ज्यादा तरक्की होगी। हां, कल-कारखानेवाले अपनी पूंजीके जोरसे और राज्यके आश्रयसे जो धन लोगोंसे खूब लूट सकते हैं, वह रुकेगा और अुनकी आमदनी शायद कुछ कम होगी। परन्तु यदि हम समाजवादी व्यवस्थाके नामसे अब चलना चाहते हैं और आगे बढ़ना चाहते हैं तो हमें यही करना चाहिये, ताकि पूंजीवाद और व्यक्तिके स्वार्थ पर नियंत्रण लगे और वे समाज तथा आम जनताके हितमें काम करें।

शाहपुरासे जो किस्सा जाननेको मिलता है, वह अिस बातको साफ शब्दोंमें बताता है। वे भाअी लिखते हैं:

"हम लोग राजस्थानके मेवाड़ अिलाकेके जिला भीलवाड़ामें अपनी संस्था द्वारा वस्त्र-स्वावलंबनका काम कर रहे हैं। यह वही क्षेत्र है, जहां पूज्य बापूजीने श्री जेठालाल भाअीको बिजौलिया भेजकर यहांके प्रचलित वस्त्र-स्वावलम्बी क्षेत्रको व्यवस्थित रूपसे विकसित करनेका प्रयत्न किया था। यह अीश्वरकी कृपा है कि अिधरके किसान अपनी पैदावारका कपास छांटकर तथा लोढ़कर रुअी रख लेते हैं, और फिर अपने ही घरोंमें कातकर मोटे सूतका रेजा बनवा लेते हैं। यह रिवाज मेवाड़में प्रायः सर्वत्र है।

"परन्तु दुर्भाग्यसे अिस अुत्तम कार्यको नष्ट करनेके लिअे अिन वर्षोंमें और मुख्यतः गत वर्षसे अेक जोरदार प्रयत्न चल रहा है। वह यह है कि यहांके अेक मिल-मालिकने सूत-कताअीकी मिल खोलकर चारसे छः नम्बर तकका सूत कातना आरम्भ कर दिया है। और मुख्यतः अिस वर्ष तो चारसे छः नम्बर तकके सूतकी कुकड़ियां बाजारमें भारी रूपसे प्रचलित हो गअी हैं। अिससे यहां किसानोंमें

www.vinoba.in

चलनेवाले वस्त्र-स्वावलंबनके काम तथा खादी-कार्यमें चलनेवाले कतवारियोंके काम पर मानो वज्रपात हो रहा है। खादी-कार्यकी छाती पर मानो घन पड़ रहा है। अिस प्रकार हाथकी कताअीको धक्का पहुंचाने और वस्त्र-स्वावलंबनको चौपट करनेका यह नया रास्ता अख्तियार किया गया है।

"यह बतानेकी आवश्यकता नहीं कि पूज्य बापूजीने बराबर अिस बात पर जोर दिया था कि खादीको पनपाने और वस्त्र-स्वावलंबनको बढ़ानेमें कमसे कम मिलों पर अमुक नम्बरका सूत न कातनेके लिअे प्रतिबन्ध लगाना खादी-कार्यकी मददकी पहली किस्त मानी जानी चाहिये। परन्तु अब स्वराज्य हो जानेके बाद यह अुल्टी गंगा बहने लगी है।"

सरकारकी ओरसे बताया जाता है कि नयी कताअी मिल खोलनेकी परवानगी नहीं दी जाती है। यदि अूपरकी बात सही है, तो राजस्थानमें नअी मिल कैसे अिस काममें लग सकती है, यह समझमें नहीं आता। और आज जब हम बेकारी दूर करना चाहते हैं, तब अेक खादी-केन्द्रमें, जहां बरसोंके प्रयत्नसे लोगोंमें खादीने प्रवेश पाया है, अेक पूंजीपति कैसे अपनी मिल खोलकर अिस कामको तबाह कर सकता है? यह बड़ी करुण घटना मानी जायगी। सरकार फौरन अिस सही शिकायतकी तरफ ध्यान दे तो अच्छा होगा।

४–४–'५५ मगनभाई देसाई

स्वावलंबी ग्राम-जीवनकी दिशामें

(छोटी खेतीकी योजनाका दूसरा वर्ष)

सन् १९५२ में सेवाग्राम-आश्रममें छोटी खेतीकी अेक पंचवार्षिक योजना बनाअी गअी थी। योजनाका अुद्देश्य यह था कि जीवनकी मूलभूत वस्तुओंके विषयमें हमारे देहाती भाअी स्वावलंबी बनें। प्रत्यक्ष अनुभवके लिअे यह योजना बनी। प्रथम वर्षके अनुभवका विवरण दिसंबर '५३ के 'सर्वोदय' में प्रकाशित हो चुका है।[1]

अिस वर्ष पांच अेकड़की काश्त की गअी, जिसमें मनुष्योंके ११,४०५ और बैलोंके १,४९६ घंटे लगे। काश्तकी कुल सोलह प्रक्रियायें होती हैं। प्रत्येक प्रक्रियामें लगे घंटोंकी तालिका अिस प्रकार है:

प्रक्रियाका नाम	आदमीके घंटे	बैलजोड़ीके घंटे
जमीन-जुताअी (तैयारी)	१,१३४	६६५
बोवाअी	८४१	८७
सिंचाअी	८२९	४२९
निंदाअी	१,०५१	...
गुड़ाअी	४२५	१७
खाद (ढुलाअी, फैलाव)	४४२	३५
रखवाली	११०	...
सार-संभाल	२८४	...
कटाअी	२,५४६	...
गाय-बैलकी सेवा	१,७१२	...
कोठार	१५८	...
निरीक्षण	१३६	...
कंपोस्ट	४५१	५८
औजार-मरम्मत	२०५	...
१९५४–'५५ सालकी जमीनकी तैयारी	४३५	११७
अन्य[2]	६४६	८८
कुल	११,४०५	१,४९६

स्पष्ट है कि बैलोंकी अपेक्षा आदमियोंके घंटे जमीनकी तैयारी, बोवाअी, निंदाअी आदिमें अधिक लगे। अिसका कारण यह है कि कअी बार हाथसे जुताअी, बोवाअी और निंदाअी की गयी। हाथ-औजारसे गुड़ाअी करनेसे भी आदमीके अधिक घंटे लगे।

खाने-पीनेकी कोअी भी चीज बाहरसे न खरीदनी पड़े, अिस स्वावलंबी दृष्टिसे पांच अेकड़ जमीनमें अधिकसे अधिक जीवनोपयोगी फसलें पैदा की गयीं। तालिका अन्तमें दी गअी है।

हमारे प्रयोगमें अिस वर्ष दो कठिनाअियां और भी रही हैं:

१. सन् '५३ में गर्मी ११८° डिग्री तक पहुंच गयी थी। अिस कारण केला, पपीता, आम आदिकी फसलको बहुत नुकसान हुआ।

२. सन् '५३ में वर्षा ३९·९५ अिंच हुअी। अतः यहांकी जमीन मशहूर पनिहाअी जमीन होनेसे ज्वारीकी फसल मर गअी। अैसी जमीनके लिअे ज्यादासे ज्यादा ३० अिंच वर्षा पर्याप्त होती है।

परिणाम

१. पांच अेकड़में जो पैदावार हुअी, वह संतुलित आहार तथा प्रति व्यक्ति २,५०० कैलरीके अनुपातमें सात व्यक्तियोंके लिअे पर्याप्त है।

२. प्रति दिन छह घंटेके हिसाबसे पांच आदमियोंने काम किया है। सात व्यक्तियोंको संतुलित आहार मिला है। अेक कुटुंबमें लगातार काम करनेवाले पांच व्यक्तियोंको समय मिलना कठिन होता है। अैसी हालतमें छोटी खेती द्वारा अेक कुटुंबका संतुलित आहारसे जीवन-निर्वाह करना हो, तो काश्तके ढंगको बदलना होगा। बदलनेका अर्थ है, दो अेकड़की काश्तमें अेक परिवारका जीवन-निर्वाह हो। दो अेकड़में छह हजार घंटे काम करना होगा। काश्तके लिअे छह घंटे मेहनत अिसलिअे मानी गअी कि कपड़ेके लिअे कताअी तथा पठन-पाठनके लिअे भी समय निकालना होता है।

३. काश्तकी सभी प्रक्रियाअें ठीक-ठीक अनुपातमें होनी चाहिये, नहीं तो बहुत नुकसानकी संभावना रहती है।

४. स्कूल-कॉलेजोंमें अैसी व्यवस्था हो कि मौसमके समय छुट्टी रहे और विद्यार्थी किसानोंकी मदद कर सकें। हरअेक स्कूलमें खेती-शिक्षणका प्रबन्ध हो।

५. छोटी खेतीमें बैलका खर्च नहीं पुसाता। अुसके लिअे पर्याप्त चारा भी नहीं मिल पाता। सिंचाअीकी व्यवस्था हो, तो बैलको काम तो मिलेगा, पर चारा पाना कठिन होगा। अतः बैलोंका अुपयोग सहकारी ढंगसे हो।

६. दो बैल अेक गायकी सेवामें १,७१२ घंटे लगे। अितना समय छोटी खेतीमें बोझ होता है। तो भी बैल अिसलिअे रखने

१. यह लेख 'छोटी खेतीका अेक सफल अनुभव' नामसे ९–१–'५४ के 'हरिजनसेवक' में छपा है।

२. कुआं, पानीकी नाली, रास्ता, खेतीके सामानकी ढुलाअी आदि।

www.vinoba.in

पड़े कि काश्तमें पानीका स्थान सबसे बड़ा है। आजकी मौजूदा स्थितिमें बैलके बिना पानी निकालना असंभव है। अैसी हालतमें सामुदायिक या बिजलीके जरिये सबको पानी पहुंचानेकी व्यवस्था हो तभी छोटी खेती हो सकेगी।

७. जुताअी, गुड़ाअी, बोवाअी आदि प्रक्रियाओंमें बैलके बिना काश्त करनेके लिअे चंद औजार निर्माण किये। अिन औजारोंसे छोटी खेतीकी काश्त अच्छी तरह की जा सकती है, अैसा अनुभवसे पाया गया।

८. तीन सालमें मैं अिस नतीजे पर आया हूं कि ठीक ढंगसे छोटी खेती करना हो, तो अेक अेकड़में अेक सालमें तीन हजार घंटेकी मेहनतकी आवश्यकता है। मैं मानता हूं कि अेक कुटुंबमें मुश्किलसे ६ हजार घंटे समय मिलेगा। अैसी हालतमें अधिक खेतीके मोहमें पड़नेसे काश्तका तरीका बिगड़ जाता है।

अ.नं.	क्षेत्रफल अेकड़-गुंठा	फसल	अुत्पन्न मन-सेर-छ.
१	२–८	गेहूं	३०-१०-०
२	१–०	ज्वारी	अधिक बरसातके कारण फसल चली गअी
३	०–५	धान	७-२०-०
४	१–०	मूंग	५-२०-०
५	०–४	तुवर (अरहर)	८-२०-०
६	०–२०	चना	१-२०-०
७	०–२०	वटाणा (मटर)	१–०–०
८	०–३७	मूंगफली	१३-३३-८
९	०–१२	तिल	१-१२-८
१०	०–७	कपास	२-३०-०
११	०–५	गन्ना	—
		गुड़	६–०–०
१२	०–३	केले	—
१३	०–७	फल	४०–०–०
१४		तरकारी	१०६–०–०
१५		धनिया	०-१५-०
१६		हलदी	०-११-०
१७	३० गुंठा	लहसुन	०-१५-०
१८		राअी	०–४–०
१९		अेरंडी	२-२०-०
२०		दूध	२९-३३-४

९. छोटी खेतीको व्यापक बनाना हो तो हमने तीन सालमें जिन सोलह प्रक्रियाओंको देखा, अुनमें से हर अेक प्रक्रियाके पूर्ण ज्ञान आदिके बारेमें गांवमें अेक कृषि-सहकार-मंडल बनायें, तो अुसके जरिये सबको जानकारी हासिल होगी तथा काश्त करनेमें पूरी मदद मिलेगी।

१०. छोटी काश्तमें खादका प्रश्न बहुत कठिन है। तरकारियोंमें अधिकतर पेशाबका अुपयोग किया जाता है। प्रति व्यक्तिसे रोज २॥ पौंड पेशाब मिलता है। अिसके अुपयोगमें बहुत सावधान रहना होगा।

११. आजकल रसायन-खादका प्रचार बहुत तेजीसे चल रहा है। हमने तीन साल प्रयोग करके देखा। लेकिन नतीजा अच्छा नहीं निकला।

१२. तीन सालके प्रयोगसे हमने देखा कि अेक जानवरसे अेक सालमें ८ गाड़ी (९६ मन) खाद मिलता है।

दर	कीमत रु. आ. पा.	आदमीके घंटे घं. मि.	बैलके घंटे घं. मि.
२०	६०५–०–०	१०८४-१५	२५६-३०
		फसल २७२–०	चली गअी ९६-३०
१२	९०–०–०	४७४-१५	४०-१५
२४	१३२–०–०	३९७–०	६०–०
१३	११०–८–०	१००–०	—
१६	२५–०–०	१९४–०	४१–०
१६	१६–०–०		
२०	२७६-१२-०	१०७६-३०	५५–०
३०	३९–०–०	१३३–०	२५–०
३०	८२-१४-०	२५८-४५	१२-१५
—	३०९–१–३	४६२–०	७६-३०
२०	१२०–०–०	—	—
	९८-१०-६	२३५–०	३३-३०
७॥	३००–०–०	३०३–०	१५–०
७॥	७९५–०–०		
६०	२२–८–०		
६०	२२–८–०		
६०	२२–८–०	२४७१-४५	३१०–०
६०	६–०–०		
१६	४०–०–०		
—	६२५–०–०		
	३,७३८–५–९		

शराबबन्दी क्यों ?

भारतन् कुमारप्पा

कीमत ०–१०–० डाकखर्च ०–४–०

हमारे गांवोंका पुनर्निर्माण

गांधीजी

संपादक: भारतन् कुमारप्पा

कीमत १–८–० डाकखर्च ०–५–०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद–१४

रेड्डीजी

विषय-सूची

		पृष्ठ
लोकसेवा और राज्यसत्ता	विनोबा	४९
बम्बअी राज्यमें शराबबन्दी-सप्ताह		५१
कांग्रेसके लिअे दो प्रश्न	मगनभाई देसाई	५२
लोकशक्ति और लोकशाही	विनोबा	५३
अेक सही शिकायत	मगनभाई देसाई	५४
स्वावलंबी ग्राम-जीवनकी दिशामें	रेड्डीजी	५५

www.vinoba.in